संगीत संध्या | **शताब्दी वर्ष में आड्रे हाउस में सुरसाधिका भारत रत्न एमएस सुब्बुलक्ष्मी को किया गया याद**

सुब्बुलक्ष्मी की आवाज में हर सुबह गूंजता है विष्णु सहस्त्रनाम

जागरण संवाददाता, रांची : सुर साधिका भारत रत्न एमएस सुब्बुलक्ष्मी को शताब्दी वर्ष पर आयोजित सांगीतिक संध्या में नृत्यांजलि अर्पित कर किया गया याद। शुरुआत ओडिशी नृत्य से हुई। सुमेधा सेनगुप्ता ने ओडिशी नृत्य पेश किया। भगवान जगन्नाथ स्वामी को याद किया गया। नारायण की वंदना की गई। सुमेधा के आंगिक अभिनय से नृत्य में सजीवता आ रही थी। खुले आकाश तले आयोजित कार्यक्रम में ठंड के बावजूद सैकड़ों दर्शक कार्यक्रम का आनंद ले रहे थे। पद संचालन, धड़ संचालन, हस्तमुद्राएं, भाव-भंगिमा और आरंभिक मंगलाचरण देखने लायक था। नृत्य में सभी खो गए। अचानक जब ध्वनि बंद हुई तो तंद्रा टूटी, फिर तालियों की गड़गड़ाहट।

दूसरी प्रस्तुति रांची के श्यामा प्रसाद नियोगी का शास्त्रीय गायन था। तबले पर उनका साथ संदीप दे रहे थे। तानपुरा पर लिपिका दत्त थीं। फिर अत्तायी मजूमदार का गायन हुआ। कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनेक रंगों से परिचित कराया। राग और सुर की महिमा बताई। सुब्बुलक्ष्मी आज इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके गीत सदैव गूंजते रहेंगे। उन्होंने कहा कि आज भी घरों में सुबह-सुबह उनकी आवाज में विष्णु सहस्रनाम गूंजता है। वे संगीतप्रेमियों के लिए आदर्श हैं। संगीत एवं लोक नृत्य हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की पहचान है। यह हमारे देश की साझी संस्कृति का अनुपम उदाहरण है। खाद्यापूर्ति मंत्री सरयू राय ने कहा कि संगीत में उनका अवदान अतुलनीय है। वे विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। उन्होंने देश-दुनिया में अपनी पहचान बनाई। देश को गौरवान्वित किया। आज हम उनकी जन्म शताब्दी पर याद कर रहे हैं। रांची विवि के कुलपति रमेश पांडेय ने कहा कि इंदिरा गांधी कला केंद्र के साथ मिलकर वहां संगीत विभाग खोला जाएगा। स्वागत भाषण बच्चन कुमार ने दिया।

आड्रे हाउस में संगीत प्रस्तुत करते कलाकार • जागरण

सराहा गया है सुप्रभातम

सुब्बालक्ष्मी द्वारा गाया गया प्रातःकालीन गायन 'सुप्रभातम' बहुत सराहा जाता है। इन्होंने आदि शंकराचार्य द्वारा श्रीकृष्ण की आराधना में रचित 'भज गोविंदम' का भी गायन किया। राजगोपालाचारी की रचना 'कोराईओन रूम इल्लई' तथा 'विष्णु सहस्त्रनाम' इनकी प्रसिद्ध प्रस्तुतियां हैं। सुब्बालक्ष्मी ने हनुमान चालीसा की भी प्रस्तुति दी है, जिसे इनके प्रशंसित गायन में गिना जाता है।

नृत्य प्रस्तुत करती छात्रा

रांची विवि में खुलेगा संगीत का सर्टिफिकेट कोर्स

राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि रांची विवि में भी संगीत का सर्टिफिकेट कोर्स खुलना चाहिए। यहां कला-संस्कृति का माहौल है। नृत्य-संगीत यहां के जन-जीवन में रचा-बसा है। वह शुक्रवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में संध्या में आड्रे हाउस में भारत रत्न डॉ. एमएस सुबुलक्ष्मी की जन्मशताब्दी पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने सुबुलक्ष्मी के जीवन के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत रत्न से सम्मानित होने वाली पहली संगीतज्ञ डॉ. एमएस सुब्बुलक्ष्मी की तारीफ मशहूर संगीतकारों ने की है। उनकी कला के कद्रदान महात्मा गांधी और पंडित नेहरू भी रहे। कहा कि सुब्बुलक्ष्मी पहली भारतीय हैं, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में संगीत कार्यक्रम पेश किया। पहली स्त्री हैं, जिनको कर्नाटक संगीत का सर्वोत्तम पुरस्कार, संगीत कलानिधि प्राप्त हुआ।

डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी के जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन, राज्यपाल ने युवाओं से संगीत-शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ने का किया आह्वान

आरयू में संगीत का सर्टिफिकेट कोर्स जल्द

समारोह

रांची | वरीय संवाददाता

झारखंड में खिलाड़ी और कलाकार राज्य का नाम रौशन कर रहे हैं। संगीत के क्षेत्र में भी युवा आगे बढ़ रहे हैं। जल्द ही रांची विश्वविद्यालय (आरयू) में संगीत पर एक सर्टिफिकेट कोर्स की शुरुआत की जाएगी। जिससे यहां के संगीत प्रेमियों को एक नई दिशा मिल सके। यह बातें राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने आड्रे हाउस में मनाये जा रहे भारतरत्न डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी के जन्म शताब्दी समारोह में कहीं। उन्होंने सुब्बुलक्ष्मी के बारे में कहा कि उन्होंने भारतीय संगीत को पूरे विश्व में एक पहचान दी। युवाओं को उनके संगीत को आगे बढ़ाना चाहिए, उनकी शिक्षा पर अमल होना चाहिए।

इस मौके पर मंत्री सरयू राय ने कहा कि किसी भी संगीत में मंत्रों की महत्ता होती है, शब्द तो वहीं रहते हैं। संगीत प्रेमियों को सुब्बुलक्ष्मी से हर मायने में प्रेरणा लेनी चाहिए, उन्होंने संगीत के मायने को बारीकी से बताया है। इस अवसर पर शास्त्रीय संगीत और नृत्य का भी आयोजन किया गया। एस सेनगुप्ता ने कथक नृत्य पेश किया। श्याम प्रसाद नियोगी ने अपनी टीम के साथ शास्त्रीय संगीत पेश किया।

शुक्रवार को आड्रे हाउस सभागार में आयोजित एमएस सुब्बुलक्ष्मी जन्म शताब्दी समारोह का दीप जलाकर उद्घाटन करती राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू व मंत्री सरयू राय।

सुब्बुलक्ष्मी की जीवनयात्रा देख भावुक

राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू और मंत्री सरयू राय सुब्बुलक्ष्मी की जीवनयात्रा पर लगी प्रदर्शनी देख भावुक हो उठे। प्रदर्शनी में 87 फोटो के माध्यम से उनके जीवन को बताने का प्रयास किया गया, जिसमें बड़ी-बड़ी हस्तियों से मिले पुरस्कार से लेकर भारतरत्न लेने की तस्वीर शामिल है। साथ ही प्रदर्शनी में सुब्बुलक्ष्मी की जीवनयात्रा को गीतों के साथ चित्रण किया गया है। प्रदर्शनी में बताया गया कि महात्मा गांधी और पंडित नेहरू भी उनके संगीत के मुरीद थे। मालूम हो यह प्रदर्शनी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से लगाया गया है, जो 10 दिसंबर तक चलेगा।

प्रदर्शनी में बच्चों के अलावा नहीं पहुंच रहे लोग

यहां चार दिसंबर से ही सुब्बुलक्ष्मी की प्रदर्शनी लगायी गई है। लेकिन प्रदर्शनी का अवलोकन करने वालों की संख्या काफी कम है। कुछ स्कूली बच्चों के अलावा लोग यहां पहुंच ही नहीं रहे हैं। आयोजकों का कहना है कि जानकारी के अभाव में लोगों की संख्या में कमी आयी है।

एक से बढ़कर एक तस्वीरें

प्रदर्शनी में फोटोग्राफर डीएनवीएस सीतारमिया की तस्वीरें रखी गई हैं, जिसे स्व डॉ मंगलम स्वामीनाथन ने तैयार किया था।

कौन हैं एमएस सुब्बुलक्ष्मी

एमएस सुब्बुलक्ष्मी महान शास्त्रीय संगीतकार थीं। 16 सितंबर 1916 को दक्षिण तमिलनाडु के मदुरई में उनका जन्म हुआ था। वह देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारतरत्न और रमन मैगसे पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय संगीतकार बनी। उनकी प्रस्तुति में भजा गोविंदम, विष्णु सहस्रनाम, हरि तुमा हरो और वेंकटेश्वर सुप्रभातम सबसे प्रसिद्ध हैं। उनका निधन 11 दिसंबर 2004 को हुआ था, जिसके बाद पूरे भारत में शोक की लहर दौड़ पड़ी।

आड्रे हाउस सभागार में आयोजित प्रदर्शनी में नृत्य प्रस्तुत करती एक कलाकार।

भारत रत्न डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी को जन्मशती वर्ष पर राजधानी के संस्कृतिकर्मियों व शिक्षाविदों ने श्रद्धांजलि दी. आड़े हाउस में डॉ सुब्बुलक्ष्मी पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी, जिसमें राज्यपाल द्रौपदी मुरमू व मंत्री सरयू राय सहित कई गणमान्य लोगों ने शिरकत की. इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दी आर्ट्स के रांची रिजनल सेंटर व रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सुमेधा सेनगुप्ता की ओड़िशी नृत्य व श्यामा प्रसाद नियोगी के गायन ने मंत्रमुग्ध कर दिया. **रिपोर्ट पेज सात पर**

जन्मशती वर्ष पर कार्यक्रम. राज्यपाल ने कहा

डॉ सुब्बुलक्ष्मी की विरासत को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी

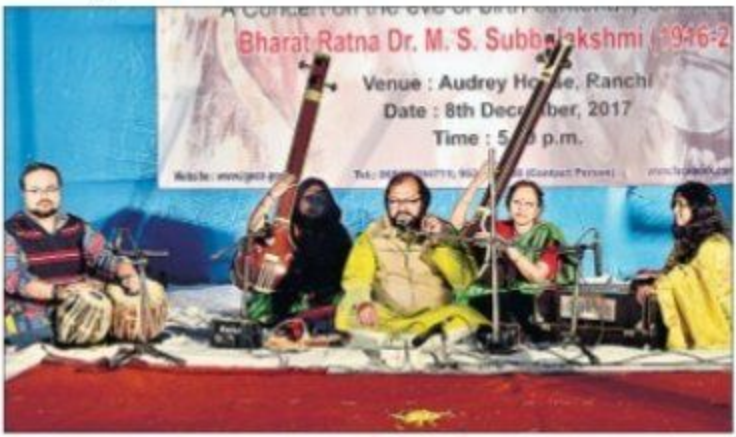

आड्रे हाउस में कार्यक्रम पेश करते कलाकार.

वरीय संवाददाता ▷ रांची

राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि डॉ सुब्बुलक्ष्मी ने भारतीय संगीत को एक मुकाम तक पहुंचाया. उनके द्वारा गाया गया विष्णु सहस्त्रनाम आज भी सबके कानों में गूंज रहा है. भारतीय संगीत की विरासत को आगे बढ़ाना ही डॉ सुब्बुलक्ष्मी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी. ज्यपाल शुक्रवार को आड्रे हाउस में आयोजित सांस्कृतिक समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थीं. यह कार्यक्रम भारत रत्न डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी के जन्मशती वर्ष के मौके पर आयोजित किया गया है. इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दी आर्ट्स के रांची रिजनल सेंटर व रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया. सेंटर के निदेशक डॉ बच्चन कुमार ने डॉ सुब्बुलक्ष्मी के बारे में विस्तार से बताया. इससे पूर्व सुमेधा सेनगुप्ता ने ओड़िशी में विष्णु वंदना पेश की. वहीं, कलाकार श्यामा प्रसाद नियोगी ने भी कार्यक्रम पेश किये.

अगले सत्र से म्यूजिक का डिप्लोमा कोर्स शुरू होगा

रांची विवि के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने कहा कि इंदिरा गांधी कला केंद्र का हमेशा से प्रयास रहा है कि ऐसा कार्यक्रम होता रहे. डॉ सुब्बुलक्ष्मी कला के केंद्र में विभूति हैं. इनकी कला-संस्कृति की विरासत को आगे बढ़ाने का प्रयास होगा. उन्होंने कहा कि अगले सत्र से म्यूजिक में डिप्लोमा कोर्स शुरू करने का प्रयास होगा.

Subbulakshmi birth centenary observed with photo exhibition

Debjani Chakraborty | TNN

Ranchi: A weeklong photography exhibition titled 'Kurai Onrum Illai (MS: Life in Music)' dedicated to the life and works of Bharat Ratna M S Subbulakshmi has been organised by the Indira Gandhi National Centre for the Arts, Ranchi Regional Centre (IGNCA, RRC) at the Audrey House here.

The exhibition, supported by the Union ministry of culture, is part of the commemoration of the birth centenary of the Carnatic music legend. Over sixty photographs with details given in lucid captions have been put up as a part of the photo exhibition and highlighted every aspect of the musical diva's life events. Most of the photographs have been sourced from newspaper archives and date back to the pre-Independence era.

The photographs document important events like her first UN concert, her meeting with Hellen Keller and the numerous charitable events she performed over the years. Snippets from her personal life were also included in anecdotes accompanying the photographs.

"I am an avid listener of M S Subbulkashmi and even though I have not had the opportunity to listen to the Tapaswini (referring to M.S.) in a live concert, I find this exhibition a great insight into the life of the musician who is an inspiration to many generations. IGNCA has taken a great step towards cultural integration by spreading knowledge about the maestro and I hope people will appreciate it," said Ranchi University vice-chancellor R K Pandey, who was present at the exhibition.

Subbulakshmi's film career, specially her portrayal of the Bhakti Saint Meera in both Tamil and Hindi cinema in the 40s, is also a major highlight of the exhibition.

आड्रे हाउस में भारत रत्न डॉ. एमएस शुभलक्ष्मी के जन्म शती समारोह में बोलीं राज्यपाल

रांची विश्वविद्यालय में अगले सत्र से संगीत में शुरू होगा सर्टिफिकेट कोर्स

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

संगीत सीखने की इच्छा रखनेवाले स्टूडेंट्स के लिए गुड न्यूज है। राज्यपाल सह कुलाधिपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि अगले सत्र से रांची यूनिवर्सिटी में संगीत में सर्टिफिकेट कोर्स शुरू कराया जाएगा। इसके लिए आरयू और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स के रीजनल सेंटर के बीच बात हो चुकी है। वे आड्रे हाउस में आईजीएनसीए और रांची यूनिवर्सिटी की ओर से भारत रत्न डॉ. एमएस शुभलक्ष्मी के जन्म शती समारोह में बोल रही थीं। बताते चलें कि रांची विवि में पहले से फाइन आर्ट्स कोर्स किया जा चुका है।

राज्यपाल ने कहा कि झारखंड के बच्चों में संगीत, खेल और डांस की प्रतिभा कूट-कूट कर भरी है। लेकिन, आजकल बच्चों का आकर्षण पाश्चात्य संस्कृति की ओर ज्यादा ही है। ऐसे में हम बच्चों को अपनी संस्कृति से अवगत कराकर उन्हें अपनी परंपरा से जोड़े रख सकते हैं। यही हमारे महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। राज्यपाल ने यह भी कहा कि स्व. शुभलक्ष्मी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व में अलग पहचान दिलाई थी। उन्हें 30 से ज्यादा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। उनका विष्णु सहस्त्रनाम हर घर में रोज सुबह सुना जाता है। मौके पर डायरेक्टर डॉ. बच्चन कुमार ने कहा कि डॉ. शुभलक्ष्मी का जन्म मदुरई में 16 सितंबर को हुआ था। उनकी याद में देशभर में इस समय उनकी जन्म सदी मनाई जा रही है।

आड्रे हाउस में आयोजित कार्यक्रम में शास्त्रीय संगीत गायक गुरु श्यामा प्रसाद नियोगी।

जन्म शती समारोह का उद्घाटन करतीं राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू व मंत्री सरयू राय और ओडिसी वंदन नृत्य प्रस्तुत करतीं सुमेधा सेनगुप्ता।

कला से जुड़े व्यक्ति का शिखर पर पहुंचना आसान : सरयू राय

मंत्री सरयू राय ने कहा कि कला से जुड़े व्यक्ति शिखर पर पहुंचते हैं, तो हम उसे ईश्वरीय वरदान कहते हैं। अभ्यास करने से भी व्यक्ति पारंगत बनता है। डॉ. शुभलक्ष्मी ने शास्त्रीय संगीत से सबको सम्मोहित किया। यह मंत्र की तरह हमारे अंदर झंकृत होता है। वर्तमान में इस विधा में थोड़ी गिरावट आई है। मौके पर आरयू के कुलपति डॉ. रमेश कुमार पांडेय ने कहा कि विवि में संगीत में डिप्लोमा कोर्स शुरू होने से झारखंड की कला संस्कृति को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा।

नियोगी के बलम नहीं आए... और मोरी गागर ना भरण देता... गीत सुन मंत्रमुग्ध हो गए श्रोता

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत सुमेधा सेनगुप्ता ने ओडिसी में विष्णु वंदना नृत्य से की। इसके बाद आकाशवाणी के शास्त्रीय संगीत गायक गुरु श्यामा प्रसाद नियोगी ने स्टेज संभाला। उन्होंने राग यमन में विलंबित लय में ख्याल गाया। बंदिश थी बलम नहीं आए...। उसके बाद तीन ताल में द्रुत लय गाया, जिसके बोल थे मोरी गागर ना भरण देता...। नियोगी की दूसरी प्रस्तुति उनके खुद का कंपोजिशन था राग जोग पर तराना। अंत में उन्होंने भजन गाया। उनके साथ तबले पर सुजित चटर्जी, हारमोनियम पर संथाली नाग, तानपुरा पर लिपिका दत्ता व सुकेष्णा चौधरी ने सहयोग किया।

उप शास्त्रीय गायिका आत्रेयी की ठुमरी कहां गुजारी सारी रतिया... पर देर तक बजीं तालियां

अंत में कोलकाता की उप शास्त्रीय गायिका आत्रेयी मजुमदार ने ठुमरी और दादरा सुनाया। इसके बाद आत्रेयी ने विलंबित लय में खमाज राग पर ठुमरी और आधार सुनाया। ठुमरी के बोल थे कहां गुजारी सारी रतिया साची कहो मुझसे बतिया...। विविध तालों पर दादरा के बाद उन्होंने स्व. शुभलक्ष्मी की रचना तुम बिन निंद न आवे सांवरिया... सुनाया। संचालन डॉ. कमल कुमार बोस ने। मौके पर आरयू की प्रोवीसी डॉ. कामिनी कुमार, रजिस्ट्रार डॉ. अमर चौधरी, डॉ. जीडी पांडेय समेत भारी संख्या में शिक्षाविद, स्थानीय कलाकार और संगीत प्रेमी मौजूद थे।

आड्रे हाउस में लगी फोटो प्रदर्शनी

शास्त्रीय गायिका सुब्बुलक्ष्मी की जीवनी पर आधारित

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा और संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की ओर से प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका भारत रत्न डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी की जन्मशती के अवसर पर आड्रे हाउस में चार से 10 दिसंबर तक उनके जीवन पर आधारित फोटो प्रदर्शनी लगायी गयी है। इस प्रदर्शनी में सुब्बुलक्ष्मी के जन्म, जीवन, संगीत कॅरियर, पुरस्कार,महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रभाव और सदाबहार गीतों के साथ-साथ उनकी संगीत यात्रा प्रदर्शित की गयी है। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर विकास मंत्री सीपी सिंह ने सोमवार को किया। उन्होंने कहा कि एमएस सुब्बुलक्ष्मी भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का काम करती रहेंगी। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यों से परंपरा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में मदद मिलती है। रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने कहा कि तिरूपति मंदिर में एमएस सुब्बुलक्ष्मी के भजनों को हमेशा सुना जाता है। उन्होंने युवा पीढ़ी से उनके गाये गीतों को सुनने की अपील की। प्रदर्शनी संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की ओर से एमएस सुब्बुलक्ष्मी की जन्मशती के स्मरण में आयोजित की गयी है। भारत रत्न एमएस सुब्बुलक्ष्मी, जिसे एमएस के रूप में जाना जाता है। भारत के महान शास्त्रीय संगीतकारों में से एक थी। उनका जन्म 16 सितंबर 1916 को दक्षिण तमिलनाडु मदुरै में हुआ था। वह लोकप्रिय शास्त्रीय गायकों में से एक थीं। वह पहली भारतीय संगीतकार हैं जिन्हें भारत रत्न और रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उनकी प्रस्तुति में भजा गोविंद, विष्णु सहस्त्रनाम, हरि तुमा हरो, वेंकटेश्वर सुप्रभातम को सबसे प्रसिद्ध माना जाता है। उनका निधन 11 दिसंबर 2004 को हुआ था। मौके पर क्षेत्रीय शाखा रांची के निदेशक डॉ बच्चन कुमार, डीएन वीएस सीतारमिया आदि उपस्थित थे।

उदघाटन के बाद उपस्थित लोग तथा उपस्थित लोगों को संबोधित करते सीपी सिंह।

सुब्बुलक्ष्मी ने शास्त्रीय संगीत को पूरे विश्व में पहचान दिलायी : द्रौपदी मुर्मू

- आड्रे हाउस में डॉ सुब्बुलक्ष्मी की जन्मशती के अवसर पर शास्त्रीय संगीत संध्या का आयोजन
- राज्यपाल ने फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया

शास्त्रीय संगीत संध्या का उद्घाटन करतीं राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू

संवाददाता

रांची। भारत रत्न डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी ने शास्त्रीय संगीत को पूरे विश्व में पहचान दिलायी। हमें उनके कार्यों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय गीत संगीत को आगे बढ़ाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा। राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय सेंटर और रांची विश्वविद्यालय रांची की ओर से आड्रे हाउस में आयोजित शास्त्रीय संगीत संध्या कार्यक्रम बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि उनके गले में सरस्वती का वास था। राज्यपाल ने कहा कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची और रांची विश्वविद्यालय रांची के बीच एक ओएमयू हुआ है जिसके तहत बहुत जल्द विद्यार्थियों के लिए संगीत सर्टिफिके ट कोर्स संचालित किये जायेंगे। यह कार्यक्रम डॉ सुब्बुलक्ष्मी के जन्मशती के अवसर पर आयोजित की गयी थी। मंत्री सरयू राय ने कहा कि डॉ सुब्बुलक्ष्मी शास्त्रीय संगीत में महारत थी। शास्त्रीय गीत की रचना और गायिकी में दक्ष थीं। जिसका उन्होंने प्रमाण दिया है। इतिहास में ऐसे लोग कम ही पैदा होते हैं। आज जरूरत है शास्त्रीय संगीत को फिर से आगे बढ़ाने की। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची के निदेशक डॉ बच्चन कुमार ने डॉ एमएस सुब्बुलक्ष्मी की जीवनी के बारे में बताया। रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने संबोधन किया। मौके पर सुमेधा सेन गुप्ता ने शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। श्यामा प्रसाद नियोगी ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ कमल बोस ने किया। मौके पर प्रतिकुलपति डॉ कामिनी कुमार, राज्यपाल के प्रधान सचिव एसके सत्पथी, डॉ जंग बहादुर पांडेय, डॉ त्रिवेणीनाथ साहू, डॉ हरि उरांव सहित अन्य उपस्थित थे।